व्याख्यान-07

बी॰ ए॰-I

अनिवार्य राष्ट्र भाषा हिन्दी

(अहिन्दी भाषी छात्रों के लिए) पूर्णांक-50

Page No.: 01
Date: 18/04/2024

रश्मिरथी

कथावस्तु

प्रथम सर्ग

कौरव और पाण्डव जब छात्रावस्था में थे, तब उन्हें शस्त्रास्त्र की शिक्षा देने के लिए द्रोणाचार्य नियुक्त किए गए। जब कुमारों की शिक्षा पूर्ण हो गयी, तब उनके रण-कौशल का जनता के समक्ष प्रदर्शन करने के लिए एक सार्वजनिक आयोजन किया गया। इसी आयोजन में अचानक कर्ण प्रकट हुआ और चूँकि उस दिन सभा में सबसे अधिक प्रशंसा अर्जुन के अस्त्र-चालन की हुई थी, इसलिए कर्ण ने अपने साथ भिड़ने की चुनौती भी उसे ही दी। किन्तु, कृपाचार्य ने कहा कि जब तक यह निश्चित नहीं हो जाए कि कर्ण की जाति क्या है तथा वह राजपुत्र है या नहीं, तब तक अर्जुन उसके साथ लड़कर उसे सम्मान नहीं देगा। दुर्योधन को अर्जुन से द्वेष तो था ही उसने सभा के समक्ष ही कर्ण को अंग देश का राजा बना दिया। फिर भीम और दुर्योधन में गाली-गलौज होने लगी, जिसे कृपाचार्य ने रोक दिया।

जब सभा विसर्जित हुई और लोग अपने-अपने घर जाने लगे, तब रास्ते में द्रोणाचार्य ने अर्जुन से कहा कि 'अर्जुन, कर्ण तुम्हारा वैरी और प्रतिबल होगा। मैंने एकलव्य का अंगूठा तो इसलिए कटवा लिया कि तुम्हारे समान धनुर्धर और कोई न हो, किन्तु इस कर्ण के साथ क्या बर्ताव करें। एक बात तो ठीक है कि उसे मैं अपना शिष्य नहीं बनाऊँगा।

जब कृपाचार्य ने सभा में कर्ण की जाति पूछी थी, उस समय कुन्ती परदे के पीछे रनिवास में बैठी हुई थी, किन्तु, उन्हें इतना साहस नहीं हुआ कि

बढ़कर कृपाचार्य से यह कह दें कि कर्ण की माता मैं ही हूँ। फिर भी, शोक के कारण वे मूर्च्छित हो गयीं और जब घर लौटने लगीं, तब एक तक जाने में भी उनके पाँव डगमगाने लगे।

कथावस्तु

द्वितीय सर्ग

रंग-ढंग से कर्ण को यह ज्ञात हो चुका था कि द्रोणाचार्य निश्चय होकर उसे धनुर्विद्या नहीं सिखायेंगे। इसलिए शस्त्रास्त्र सीखने को वह उस समय के महा-प्रतापी वीर, परशुराम जी की सेवा में पहुँचा। परशुराम संसार से अलग होकर उन दिनों महेन्द्रगिरि पर रहते थे। उनका प्रण था कि ~~क्षत्रियेतर~~ ब्राह्मणेतर जाति के युवकों को शस्त्रास्त्र की शिक्षा नहीं देंगे। किन्तु जब उन्होंने कर्ण का तेजोदीप्त शरीर और उसके कवच-कुण्डल देखे, तब उन्हें स्वयं भासित हुआ कि यह ब्राह्मण का बेटा होगा। कर्ण ने गुरु की इस भ्रान्ति का खण्डन नहीं किया। वह माँ के पेट से ही सुवर्ण के कवच और कुण्डल पहने जनमा था। शस्त्रास्त्र की शिक्षा तो परशुराम जी ने उसे खूब दी, लेकिन एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना ने भण्डाफोड़ कर दिया। बात यह हुई कि एक दिन परशुराम कर्ण की जाँघ पर सिर रखकर सोये हुए थे; इतने में एक कीड़ा उड़ता हुआ आया और कर्ण की जाँघ के नीचे घुसकर घाव करने लगा। कर्ण इस भाव से निश्चल बैठा रहा कि हिलने-डुलने से गुरु की नींद उचट जाएगी। किन्तु, कीड़े ने उसकी जाँघ में ऐसा गहरा घाव कर दिया कि उससे लहू बह चला। पीठ में गर्म लहू का स्पर्श पाते ही परशुराम जग पड़े और सारी स्थिति समझते ही विस्मित हो रहे। उन्हें लगा, इतना धैर्य ब्राह्मण में कहाँ से आ सकता है?

Scanned with CamScanner

अवश्य ही, कर्ण क्षत्रिय अथवा किसी अन्य जाति का युवक है। कर्ण सत्य को और छिपा नहीं सका तथा उसने गुरु के समक्ष सारी बातें स्वीकार कर लीं। इस पर भी परशुराम शान्त न हुए और उन्होंने यह शाप दे डाला कि ब्रह्मास्त्र चलाने की जो शिक्षा मैंने दी है, उसे तू अन्तकाल में भूल जाएगा।

विनीता कुमारी
18-04-2020

विनीता कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
डॉ एल. के. वी. डी. कालेज ताजपुर।